शोध विमर्श

लोक चेतना के कवि : भवानी प्रसाद मिश्र

श्रीपर्णा तरफदार
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
बंगवासी मॉर्निंग कॉलेज, कोलकाता

भवानी प्रसाद मिश्र पूरे जीवन के कवि हैं। यदि उन्हें लोक चेतना का कवि कहा जाए तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि सम्पूर्ण मानव समाज, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे 'लोक' में सन्निहित हो जाते हैं। एक तरफ उनकी कविता निश्छल और सहज प्रकृति-उल्लास से भरी है वहीं दूसरी तरफ व्यापक सामाजिक सहानुभूति का वातावरण रचती है। उनकी कविताओं में कोमलता की मधुर-वासंती स्निग्धता भी है और प्रतिवाद की साहसिक ओजमयता भी।

हिन्दी के सुपरिचित एवं विशिष्ट कवि भवानी प्रसाद मिश्र ने जब अपनी काव्य-यात्रा शुरू की तो वह छायावाद के उत्थान का दौर था। और उस दौर में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन प्रभृति कवियों के स्वर गूंज रहे थे। ये दोहराने की जरुरत नहीं कि उन दिनों लगभग सभी कवियों के स्वर राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत थे। राष्ट्रप्रेम का जो ज्वार लोगों के बीच से उठा था उसका व्यापक प्रभाव कविता पर भी पड़ा। इसी माहौल में जो एक और स्वर उभरा वो कुछ इस तरह था- 'जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख', और ये कहने की जरुरत नहीं कि ये आवाज कवि भवानी प्रसाद मिश्र की थी । सच है कि राष्ट्रीय चेतना के भीतर से ही इस कवि की कविता फूटती है। अपनी बात सीधे-सीधे कहने की जो विशिष्टता उनमें है, वो उन्हें उन कवियों की पंक्ति में खड़ा करती है जिन्होंने भाषा के अभिजात रूपों के बजाय सामान्य बोलचाल के रूपों को अपनाया। सच्चे जन-कवि की यह पहली पहचान है कि वह भाषा के किस स्वरुप का आग्रही है। इस कवि की भाषा अत्यन्त सहज और सरल है और बड़ी सहजता के साथ ही वो गहरी बातों को प्रस्तुत करता है । प्रश्न उठता है कि क्या भवानी प्रसाद मिश्र को जन कवि की श्रेणी में रखा जा सकता है ? तो इस प्रश्न का उत्तर यही होगा कि जो कवि अपने समय के सच से वाकिफ होता है, जो मंद पड़ती राष्ट्रीय भावना के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता है, जो देश के लिए सोचता है, जो देश के प्रति अन्याय करने वाले राजनेताओं के झूठ से वाफिफ होकर उसका पर्दाफाश करता है, उसकी कविताओं में जनपक्षधरता है। तभी तो वे जनता का आह्वान करते हुए लिखते हैं-

चलो गीत गाओ, चलो गीत गाओ
कि गा-गा के दुनिया को सिर पर उठाओ
× × × ×
अभागों की टोली अगर गा उठेगी
तो दुनिया पे दहशत बड़ी छा उठेगी
सुरा-बेसुरा कुछ न सोचेंगे गाओ
कि जैसा भी सुर पास में है चढ़ाओ
अगर गा न पाए तो हल्ला करेंगे
इस हल्ले में मौत आ गई तो मरेंगे
कई बार मरने से जीना बुरा है
कि गुस्से को हर बार पीना बुरा है ।

वास्तव में भवानी प्रसाद मिश्र का दृष्टिकोण लोकहितकारी है। लोक मंगल के खयाल से लिखी गई उनकी कविता लोकहित के लिए संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता के विकट अखाड़े में उतरती है जिसमें भाषा का तीखापन भी है। भाषा के इस तीखेपन के पीछे जो उदासी, क्षोभ और तकलीफ है, उसका कारण है राजनीति का राष्ट्रीय रूप गायब होना और उसका सत्ता केन्द्रित होना। भवानी प्रसाद मिश्र ने अपने एक पत्र में लिखा हैं, 'मैं राजनीति के क्षेत्र में अंग्रेज सरकार से लड़ाई के दिनों तक ही रहा । स्वतंत्रता पाने की हद तक मैंने हाथ बंटाया। उसके बाद राजनीतिज्ञों पर निगाह जरुर रखता रहा और उनके काम मुझे तकलीफ

ISSN 2231-0479
peer-reviewed (refereed) journal

PEER-REVIEWED REFEREED JOURNAL
ISSN 2231-0479-SAMAGAM
RNI MPHIN/2000/02531
Po.Reg. MP/BPL/4-188/2022-24
अप्रैल-2022 · मूल्य पचास रुपये | 10 तारीख को प्रकाशित · पृष्ठ संख्या 48
समागम
कहानी खादी की
खादी के धागे-धागे में अपनेपन का अभिमान भरा
माता का इसमें मान भरा, अन्यायी का अपमान भरा
-सोहनलाल द्विवेदी
1